International Journal of Arts & Education Research

डा ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का विकसित भारत की परिकल्पना : विजय 2020

आभा सिंह, डा•एस•पी•सिंह

"मेरे देश को एक विकसित राश्ट्र बना दो"

यह कथन भारत के पूर्व राश्ट्रपति एवं महान वैज्ञानिक व ि-क्षक डॉद्म एद्मपीद्मजेद्म अब्दुल कलाम का है। जब एक स्कूली बच्चे ने उनसे प्र-न किया कि यदि ई-वर आपको एक वरदान देना चाहे तो आप क्या माँगेंगे ? डॉद्म कलाम के जीवन का लक्ष्य है कि सन् 2020 तक भारत एक विकसित राश्ट्र बने।

विकसित देश के मायने

एक साधारण भारतीय की नजर में एक विकसित दे-ा की हैसियत क्या मायने रखती है? उसे डॉद्म कलाम ने निम्न शब्दों में व्यक्त किया है-

इसके मायने होंगे ऐसी स्थिति, जिसके आ जाने पर, हमारी अर्थव्यवस्था में जोरदार परिवर्तन होगा और वह दुनिया की सबसे ज्यादा स-ाक्त और लाभप्रद अर्थव्यवस्थाओं में से एक होगी। उसकी सार्थकता भारत जैसे दे-ा के लिए यह होगी कि दे-ा के लोगों की सेहत बेहतर होगी, सबको उच्च दर्जे की ि-क्षा मिलेगी, दे-ा की सुरक्षा इतनी मजबूत हो जाएगी कि कोई मुल्क उसकी तरफ आँखें उठाने की हिम्मत नहीं कर पाएगा। कई महत्वपूर्ण और बड़े क्षेत्रों में उसकी मूल समर्थता और क्षमता उच्च कोटि की वस्तुओं का निर्माण और उत्पादन करने लायक हो जाएगी। उनका अधिकाधिक निर्यात करके दे-ा के लोग ज्यादा से ज्यादा खु-ाहाल और संतुश्ट हाल में दिखाई देंगे।

क्या है विजन 2020

डा कलाम ने भारत के लिए, विकसित देश की हैसियत को प्राप्त करने के लिए एक लक्ष्य निर्धारित किया है, जिसमें वो सन् 2020 तक तथा उसके पूर्व भी इस हैसियत को प्राप्त करने के लिए संकल्पबद्ध हैं। वो कहते हैं-

सन् 2020 तक तथा उसके पूर्व भी, विकसित भारत की कल्पना, स्वपन मात्र नहीं है। यह कुछ गिने-चुने भारतीयों की प्रेरणा मात्र ही नहीं होना चाहिए, यह हम सब भारतीयों का मिशन होना चाहिए, जिसे हमें पूर्ण करना है।

अपने इसी स्वप्न को साकार करने के लिए वो समस्त देशवासियों का आह्वान करते हुए कहते हैं कि -

भारत आज भी लंबे समय से विकासशील देशों की कतार में खड़ा है। आइये, हम सब मिलकर, विकसित भारत का सपना देखें, उसकी परिकल्पना करें। मुझे पूरा विश्वास है कि भारत में विकसित देशों की कतार में खड़े होने की क्षमता मौजूद है और उसका यह स्वप्न अगले 15-20 वर्शों में पूरा हो सकता है।

डॉ वाईद्मएसद्मएसद्म राजन के साथ लिखी अपनी पुस्तक 'भारत 2020 : नवनिर्माण की रूप रेखा में उन्होनें अपने स्वप्न को एक योजना का रूप दिया है और यह संकल्प दोहराया है कि वे अपने देश को सन् 2020 तक निश्चय ही विकसित राश्ट्रों की कतार में लाकर खड़ा कर देंगे। अपनी योजना का खाका तैयार करते हुए उन्होनें स्पश्ट किया है कि सन् 2020 तक या उससे पहले भारत को विकसित देश बनाना मात्र एक स्वप्न नहीं है, और न ही यह एक कोरी आशा है, बल्कि यह तो हम सभी भारतवासियों का एक मिशन है, जिसे हम पूरा करके ही दम लेंगे। विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में डॉद्म कलाम ने छात्र, युवा, शिक्षावद्, किसान, वैज्ञानिक, इंजीनियर, तकनीशियन, चिकित्सक, चिकित्साकर्मी, उद्योगपति, सैन्यकर्मी, प्रशासक, अर्थ-ाास्त्री, कलाकार और खिलाड़ियों की क्या-क्या भूमिका हो सकती है, उन्हें बड़े प्रभावपूर्ण ढंग से रेखांकित किया है। डॉद्म कलाम के शब्दों में-

'मैं व्यक्तिगत रूप से सोचता हूँ कि भारत में आर्थिक या सामाजिक विकास के संदर्भ में जी-8 देशों को भी पीछे छोड़ने की क्षमता है। हमारे अंदर इस ईंधन को प्रज्जवलित करने वाली अग्नि का अभाव है।

हमारे पास प्राकृतिक संसाधन हैं, लेकिन हम उनका लाभ नहीं उठाते, इसके विभिन्न कारण खराब नेतृत्व, मूल्य संवर्धन का अभाव इत्यादि हो सकते हैं।

एक कहावत है कि एक भेड़ के नेतृत्व में शेरों की सेना, एक शेर के नेतृत्व में भेड़ों की सेना से हार जाएगी। अभी सबसे अधिक आव-यकता स्वप्नद्रश्टा तथा योग्य नेतृत्व की है, जो अज्ञानता के अंधकार को दूर कर सके।

विकास का एक अन्य प्रेरक है, साक्षरता। एक अशिक्षित देश कभी भी प्रगति नहीं कर सकता। हमें 'महाभारत' नहीं बल्कि 'साक्षर भारत' का सपना देखना चाहिए।

मेरा यह भी मानना है कि हममें वैि-वक अर्थव्यवस्था में अपने उत्पादों को बेचने की आक्रामक प्रवृत्ति का अभाव है। हम इसके बजाए 'अमेरिका में निर्मित उत्पादों' से अधिक प्रभावित हैं। हमें भारतीय उत्पादों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

हमें अपनी जैव-विविधता को भी पहचानना चाहिए और उन्हें पेटेंट कराना चाहिए। साथ ही हमें बढ़ती जनसंख्या के संकट पर भी निगाह रखनी चाहिए क्योंकि मात्रा में वृद्धि, गुणवत्ता में कमी को प्रेरित करेगी। इसके लिए मैं चीनी सरकार द्वारा उठाए गए सख्त कदमों का सुझाव दूँगा।

भारत जैसा लोकतांत्रिक दे-ा किसी भी विकसित दे-ा को पछाड़ सकता है, यदि एक बार उसके लोग साथ-साथ चलें। भौतिकी में यदि दो फ्रीक्वेंसी एक दूसरे से मिलती हैं तो अनुवाद होता है, इसी प्रकार यदि हमारे विचारों की फ्रीक्वेंसी एक दूसरे से मिलती है तथा साथ ही समन्वित प्रयास भी होते हैं तो भारत एक वि-व-ाक्ति के रूप में उभरेगा।[1]

विकसित भारत के लिए समन्वित क्रिया

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

भारत को विकसित राश्ट्रों की पँक्ति में :ाामिल करने के लिए डॉद्म कलाम ने वि-ोश सुधार की आव-यकता पर बल दिया है। साथ ही उन्होंने इन क्षेत्रों में समन्वित विकास पर भी बल दिया है। उन्हीं के :ाब्दों में-

भारत के पास एक विकसित दे-ा बनाने के लिए सभी संभावित संसाधन हैं, फिर भी यह स्वप्न वास्तविक नहीं है। भारत के पास पारंपरिक ज्ञान की संपदा है, लेकिन यह बिखरा हुआ है। हमें उन सभी ज्ञानों को एकत्रित करना होगा।[2]

डा कलाम के अनुसार ये पाँच क्षेत्र निम्नलिखित होने चाहिऐं-

1. **कृशि क्षेत्र**- भारत के पास विशाल उर्वरक भूमि है और हम अनाज के उत्पादन में दूसरे स्थान तथा फल के उत्पादन में पहले स्थान पर हैं, लेकिन उत्पादकों (उपज प्रति हेक्टेयर) के संदर्भ में हम पैंतालीसवें स्थान पर हैं। हमें उच्च पोशण तथा गुणवत्ता वाले खाद्यान्न उपजाने की आव-यकता है। हमें नवीन खाद्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों के इस्तेमाल द्वारा कृशि उत्पादों में मूल्य संवर्धन करना चाहिए।

2. **शिक्षा तथा स्वास्थ्य**- ज्ञान से संपन्न मस्तिश्क उत्पन्न करने के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण है, ताकि वे नये विचार दे सकें। दुर्भाग्यवश हमारी शिक्षा प्रणाली ऐसा नहीं करती। उसमें एक प्रकार की सीखने की प्रक्रिया होनी चाहिए, न की पढ़ने की या पुनरूत्पादन प्रक्रिया। ग्रामीण क्षेत्रों में भी बच्चों को ि-क्षा प्रदान की जानी चाहिए। टेली-शिक्षा लाभदायक हो सकती है।

जैव-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास द्वारा स्वास्थ्य क्षेत्र में काफी सुधार हो सकता है। भारत के पास औशधीय जड़ी-बूटियों की संपदा है और जैव-प्रौद्योगिकीविदों को इन संसाधनों को मानव जाति के लिए उपयोगी बनाने के लिए इसका लाभ उठाना चाहिए।

3. **आधारभूत सुविधाएँ**- सड़कों तथा बिजली द्वारा सभी ग्रामीण क्षेत्रों की कनेक्टिविटी आव-यक है। च्न्। का कार्यक्रम बड़े पैमाने पर मदद दे सकता है।

4. **रणनीतिक क्षेत्र**- भारत ने वैमानिकी तथा अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में काफी प्रगति की है, फिर भी स्वतंत्रता के बाद पाँचवें स्थान पर है। हमें उपग्रहों के लिए सौर ऊर्जा प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। परमाणु ऊर्जा को रक्षा उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए।

5. **सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी**- इस क्षेत्र को अन्य सभी क्षेत्रों को सूचना तथा कनेक्टिविटी प्रदान करनी चाहिए। सिलिकॉन युग समाप्त हो चुका है। भारत को नैनो प्रौद्योगिकी पर ध्यान देना चाहिए और इस क्षेत्र में नई खोजें करनी चाहिए। सभी ग्रामीण क्षेत्रों के लिए इलेक्ट्रॉनिक कनेक्टिविटी स्थापित की जानी चाहिए और उच्च बेंड़विड्थ उपलब्ध कराना चाहिए। सूचना प्रौद्योगिकी हमारी मुख्य क्षमताओं में से एक है और हमें उसे बड़े पैमाने पर विकसित करना चाहिए।

युवा शक्ति : संकल्पना 2020 का मूलाधार

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

डॉ एद्गपीद्गजेद्ग अब्दुल कलाम सन् 2020 तक भारत को एक विकसित राश्ट्र की श्रेणी में लाने के लिए संकल्पबद्ध हैं। अपने संकल्प को साकार करने की संभावना उन्हें भारत की युवा :ाक्ति में दिखाई देती है। वह इस युवा शक्ति को भारत का सबसे प्रबल संसाधन मानते हैं। डॉद्ग कलाम के :ाब्दों में-

हमारा विश्वास है कि प्रज्जवलित युवा मस्तिश्क प्रबल संसाधन होते हैं। धरती के ऊपर, आका-ा में तथा जल के नीचे छिपे किसी भी संसाधन से यह संसाधन कहीं अधिक शक्ति-ाली है। हम सबको आज का 'विकासशील' भारत एक 'विकसित' भारत में रूपांतरित करने के उद्येश्य से एक साथ मिलकर काम करना चाहिए, और इस महान उद्योग की पूर्ति के लिए आव-यक क्रांति को हमारे मस्तिश्कों में जन्म लेना चाहिए।[3]

डॉ कलाम विकसित भारत की संकल्पना : विजन 2020 के लिए यहाँ की युवा :ाक्ति को मूलाधार मानते हैं, डॉद्ग कलाम के शब्दों में-

अपने राश्ट्र के लिए सर्वाधिक प्रेरक शक्ति तो हमारी यही भावना है कि ''हम सब कुछ कर सकते हैं''। जब हमारे पास 25 वर्श से कम आयु वाले 54 करोड़ युवा हैं तो फिर भला कौन हमें सन् 2020 तक एक विकसित राश्ट्र बनने से रोक पाएगा।[4]

डॉ कलाम आगे कहते हैं कि सन् 2020 तक तथा उसके पूर्व भी, विकसित भारत की कल्पना स्वप्न मात्र नहीं है और न ही यह कुछ गिने-चुने भारतीयों की अपेक्षा और प्रेरणा मात्र होना चाहिए, वरन् यह हम सब भारतीयों का एक मि-ान होना चाहिए, जिसे हमें पूर्ण करना है।

युवाओं का आह्वान

डॉ कलाम सन् 2020 तक विकसित भारत के अपने संकल्प को साकार करने के लिए भारतीय युवा पीढ़ी का आह्वान करते हुए कहते हैं कि उन्हें अपने देश को महान बनाने के मिशन में जुट जाना चाहिए। उन्होंने अपने भावों को निम्नलिखित कविता के माध्यम से व्यक्त किया है-

हे भारतीय युवक

ज्ञानी - विज्ञानी

मानवता के प्रेमी

संकीर्ण तुच्छ लक्ष्य

की लपलसप पाप है।

मेरे सपने बड़े हैं,

मैं मेहनत करूँगा,

धरनवसहरे, गुणनवरन हरे

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

यह प्रेरणा का भाव अमूल्य है,

कहीं भी धरती पर

उससे ऊपर या नीचे

ज्ञान का दीप जलाकर रखूँगा

जिससे मेरा देश महान रहे।

युवाओं का संदेश

1. **स्वप्न, स्वप्न, स्वप्न**- डॉ॰ कलाम ने बच्चों और युवाओं को देश के सभी कोनों में सैकड़ों बार यह संदे-ा दोहराया है। वे कहते हैं कि स्वप्न विचारों में परिवर्तित होते हैं और विचार कार्यों में परिणित होते हैं। उन्होंने अपने इसी संदेश को एक कविता के रूप में व्यक्त किया है।

   स्वप्न, स्वप्न, स्वप्न

   स्वप्नों में छिपा है सृजन

   स्वप्नों की मूर्त छवि

   होते विचार हैं,

   जिनसे जन्मा कर्म

   करता निर्माण है।

   विचारों से पैदा होते हैं कर्म

डॉ कलाम युवाओं को बड़े स्वप्न देखने को कहते हैं और यह कहते हैं कि छोटा लक्ष्य अपराध है। अतः युवकों को बड़े स्वप्न देखने चाहिए क्योंकि ये स्वप्न ही विचार में परिवर्तित होते हैं और विचार कर्म में। अतः जब स्वप्न ही नहीं होंगे तो क्रांतिकारी विचार भी जन्म नहीं लेंगे और जब विचार नहीं होंगे तो क्रिया भी नहीं होगी। सफलता सदैव स्वप्नों के पीछे चलती है, मार्ग में कुछ बाधाएँ हो सकती हैं, देरी हो सकती है, पर अंततः सफलता अव-य मिलती है।

2 अदम्य साहस का संदे-ा- डॉ॰ कलाम युवा :क्ति को जो दूसरा संदे-ा देते हैं, वह है अदम्य साहस। अर्थात किसी भी कठिन लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ना, बाधाओं को कठोर परिश्रम द्वारा नियंत्रित करना और अंततः सफलता प्राप्त करना। डॉ॰ कलाम के शब्दों में-

अपने देश के युवाओं के लिए मेरा संदश है। हमारे सभी युवाओं में अदम्य साहस होना चाहिए। अदम्य साहस के दो अंग हैं- पहला, अपना एक लक्ष्य बनाओ और फिर उसे पाने की दिशा में जुट जाओ तथा

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

दूसरा, यह कि कार्य करते समय बाधाएँ तो आएंगी हीं, अतः बाधाओं को अपने ऊपर कदापि हावी मत होने दो, अपितु बाधाओं को ही अपने नियंत्रण में रखो, उन्हें परास्त करो और सफल बनो।"

विकसित भारत की अंतर्दृश्टि और छात्रों के मूल कर्तव्य

डॉ कलाम ने सन् 2020 तक विकसित भारत के लिए जो अंतर्दृश्टि रची है, उसके लिए उन्होंने छात्रों के लिए कुछ मूल कर्तव्यों का निर्धारण किया है, जिसे उन्होंने वाई, सुंदर राजन के साथ अपनी पुस्तक महा-क्ति भारत में निम्न प्रकार व्यक्त किया है-

मैं विश्वास करता हूँ कि ये चार विशेश तरीके हैं, जो प्रत्येक छात्र में वर्श 2020 की दृश्टि को महसूस कराने में योगदान दे सकते हैं-

1. मेहनती बनो- हमें अपने दृढ़ नि-चय और प्रयास के साथ काम करना होगा। दृढ़ निश्चय से बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है। उन चमत्कारों को जानों, जो जापान और जर्मनी द्वारा द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद प्राप्त किए गए। आप जो भी कर रहें हैं, उसी में आपको भी कठिन मेहनत करनी होगी।

2. खोजकर्ता बनो- हमने देखा है कि किस तरह भारतीय तकनीकी शिक्षा उद्योग ने अकल्पनीय रूप से विकास किया है, जिसने विश्व में अपनी पहचान बनाई है। उन उद्योगों ने बिना अधिक सरकारी अनुदानों के स्वयं ही विकास किया है। एक अवसर की खोज में आप भी कुछ रचनात्मक सोच सकते हैं, जिससे आप भारत के विकास में मदद करेंगे।

3. :ाासन सीखो- जब तक शासन संरचना स्थिर नहीं होगी तब तक किसी भी तरह का विकास सम्भव नहीं है। यह जरूरी है कि सरकार लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए उत्तरदायी बने। आप विद्यालय प्रशासन में भाग लेकर इसका पर्याप्त अभ्यास कर सकते हैं। आप अन्य छात्रों के लिए कई नीतियों का सूत्रपात कर सकते हैं और घटनाओं को आयोजित कर सकते हैं।

4. अपना नैतिक कर्त्तव्य पूरा करो- अपने विद्यालय और पड़ोस के नैतिक कार्यक्रमों में सृजनात्मकता और उत्साह के साथ भाग लें, चाहे स्थानीय पार्क की सफाई करनी हो या पौधा लगाना हो, गरीब बच्चों की मदद करनी हो या फिर विद्यालय को साफ रखना हो। यह सोच न सिर्फ पर्यावरण को बल्कि पूरे भारत को बदलेगी। सिंगापुर में हुए परिवर्तन को देखो, जो कभी बहुत पिछड़ा शहर था। आज सरकार के द्वारा प्रारम्भ की गई योजनाओं और प्रबुद्ध नागरिकों के सहयोग से सिंगापुर पूरे विश्व के साफ-सुथरे शहरों में से एक है। यदि हर विद्यार्थी अपने पड़ोस को साफ रखने का कार्य करे तो दूशित शहरी क्षेत्र साफ और सुंदर बन जाऐंगे।"

शपथ

डॉ कलाम ने भारत के युवा छात्रों के लिए निम्नलिखित शपथ नि-चित की है-

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

जैसा कि मैं सोचता हूँ, यह शपथ हमारे दे-ा के हर बच्चे को लेनी चाहिए। इसे ध्यानपूर्वक पढ़ो- अगर तुम इन दस चीजों में से कुछ भी कर सकते हो तो तुमने 'भारत 2020' की दृश्टि की शुरूआत कर दी है।

1. मैं पूर्ण समर्पण से अपनी पढ़ाई या कार्य को पूरा करूँगा और उसमें अच्छे से अच्छा करूँगा।

2. मैं कम से कम दस लोगों को पढ़ाऊँगा, जो न तो पढ़ सकते हैं और न लिख सकते हैं।

3. मैं कम से कम दस पौधे लगाऊँगा और लगातार उनकी देखभाल करके उनकी वृद्धि को सुनि-चित करूँगा।

4. मैं शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में भ्रमण करूँगा और कम से कम पाँच लोगों को बुरे व्यसन एवं जुए की लत से आजाद कराने के लिए कठिन मेहनत करूँगा।

5. मैं अपने बंधु-बांधवों के दुखों को दूर करने के लिए लगातार प्रयास करूँगा।

6. मैं किसी भी प्रकार के धार्मिक, जातिगत और भाशागत भेदभाव का समर्थन नहीं करूँगा।

7. मैं ईमानदार बनूँगा और दूसरों को अनुकरण करने के लिए स्वयं एक उदाहरण बनूँगा।

8. मैं एक जागरूक नागरिक बनने की दि-ा में कार्य करूँगा और अपने परिवार को साहसी बनाऊँगा। मैं हर महिला का सम्मान करूँगा और नारी ि-क्षा का समर्थन करूँगा।

9. मैं शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग लोगों का हमे-ा मित्र या सहयोगी रहूँगा और उन्हें स्वस्थ लोगों की तरह बनाने का पूरा प्रयत्न करूँगा।

10. मैं अपने देश एवं जनता की सफलता की गर्व सहित पशंसा करूँगा।

भारत के युवाओं के पास अदम्य साहस होना चाहिए। इसके दो अर्थ हैं- पहला, आपको अपना लक्ष्य निर्धारित कर उस कार्य को करना है और दूसरा, यदि ऐसा करते हुए कभी किसी समस्या से मुठभेड़ हो जाए तो उसे अपने ऊपर हावी नहीं होने देना है। तुम्हें उन पर हावी होना है, उन्हें हटाना है तथा सफल होना है। युवाजन हमारे राश्ट्र की मूल्यवान सम्पत्तियों में से एक हैं। युवाओं का प्रज्जवलित मस्तिश्क पृथ्वी पर, पृथ्वी के अंदर, पृथ्वी के ऊपर सबसे प्रमुख स्त्रोत है।"

डॉ कलाम के अनुसार प्रारम्भ करने के लिए यह आव-यक है कि हम उस दृश्टि से और उन सभी कारकों से, जो इसे सच करने में मदद करेंगे, अवगत रहें। जब हम निर्णय करते हैं कि हमें जीवन में क्या करना है और हम क्या पढ़ना चाहते हैं तो हम सोचें कि यह सब नई दृश्टि में कैसे योगदान दे सकता है। हमें दूसरे मित्र-परिवारों को अपने दृश्टिकोण के बारें में बताकर उन्हें यह सब महसूस कराने में मदद करनी चाहिए।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एवं वाई. सुन्दर राजन (2007) : महा-ाक्ति भारत : प्रभात प्रका-ान, नई दिल्ली पृ0 90.
2. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (2007) : तेजस्वी मन : महा-ाक्ति भारत की नींव, प्रभात प्रका-ान, नई दिल्ली पृ0 29.
3. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (2007) : तेजस्वी मन : महा-ाक्ति भारत की नींव, प्रभात प्रका-ान, नई दिल्ली पृ0 29.
4. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (2006) : हम होंगे कामयाब, प्रभात प्रका-ान, नई दिल्ली, पृ0 29.
5. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एवं वाई. सुन्दर राजन (2007) : महा-ाक्ति भारत : प्रभात प्रका-ान, नई दिल्ली पृ0 90.
6. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (2006): हम होंगे कामयाब, प्रभात प्रका-ान, नई दिल्ली, पृ. 58.
7. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (2006): हम होंगे कामयाब, प्रभात प्रका-ान, नई दिल्ली, पृ. 58.
8. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (2006) : हम होंगे कामयाब, प्रभात प्रका-ान, नई दिल्ली, पृ0 16.
9. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (2007) : तेजस्वी मन : महा-ाक्ति भारत की नींव, प्रभात प्रका-ान, नई दिल्ली पृ0 31.
10. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (2006) : हम होंगे कामयाब, प्रभात प्रका-ान, नई दिल्ली, पृ0 64.
11. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (2006) : हम होंगे कामयाब, प्रभात प्रका-ान, नई दिल्ली, पृ0 57.
12. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (2006) : हम होंगे कामयाब, प्रभात प्रका-ान, नई दिल्ली, पृ0 51.
13. ैविजप ैपिअमदकन बिंदकतंए ैदरपअ ज्ञनउंत ैंतिउं - ।उपज ैंतिउं ;श्रनसलए 2007द्धरू ।इकनस ज्ञंसंउश्ेण

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.